Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

भारतीय समाज मे दहेज प्रथा : एक सामाजिक कंलक

Dr.Rajesh Chandra Paliwal
Sr.Assisstant Professor Political Science
Regional Director ,UOU
B.S.M.P.G.College Roorkee

Deepmala
Research Scholar
B.S.M.P.G.College Roorkee

प्रस्तावना

दहेज दहेज एक ऐसा शब्द है। जिससे सारा समाज परिचित है। यह एक कंलक, दानव, अभि"ाप, कैंसर,कोढ गन्दा किडा ,दिमग,विष आदि नामों की संज्ञा पा चुका है। दहेज लेना और देना दोनों ही अपराध है। आज हमारे समाज की बेटियाँ चिख–चिख कर यही पुकार कर रही है कि हमें दहेज जैसे जाल से मुक्त करो दहेज का अर्थ है– जो सम्पति, विवाह,के समय वधू के परिवार की तरफ से वर पक्ष को दी जाती है। देखा जाऐ तो पूरे वि"व में दहेज का लम्बा इतिहास विध्यमान है। पहले भारत में ऐसे दहेज हुंडा या दक्षिणा के रूप में माना जाता था। मगर आज दहेज की कोई सीमा नही है। आज वर्तमान में दहेज की कीमतों में भी बढावा आ गया है। पहले जो वर एक साईकिल में खु"ा हो जाता था। आज के युग में वो हवाई जहाज देने पर भी खु"ा नही होता है। इसी कारण पढी–लिखी लड़कियों को योग्य वर नही मिल पाते क्योंकी धन की मांग इतनी बढी होती है। जो परिवार वाले पूरी करने में असमर्थ रह जाते है। उन्हे अयोग्य बेरोजगारी,अ"िाक्षित या कम पढें लिखें लडको के साथ बांध दिया जाता है। देखा गया है की दहेज से बचने की वजह से भी माँ–बाप अपनी बेटी की शादी बचपन में ही कर देते है। जिससे बाद में दहेज ना देने पढे दहेज नाम का किडा हमारे समाज मे फलता–फुलता जा रहा है। प्रात;काल मे जब हम समाचार पत्र खोलते है तो रोज नई दहेज की खबर पढने को मिलती है। कि आज दहेज के कारण बहू की पिटाई की ,उसे घर से निकाला ,उसे जलाकर मार दिया ,या दहेज की यातनाओं से तगं आकर उसने स्वयं ही आत्महत्या कर ली आदि। आये दिन अखबारो मे दहेज के कारण दिल दहला देने वाली खबरे पढनें को मिलती है। आज पूरे वि"व हो दहेज के दानव ने अस्त व्यस्त कर दिया है। दहेज प्रथा के कारण विवाह एक व्यापार प्रणाली बन गया है। भारतीय समाज मे दहेज के कारण अनेक बेटियॉ आत्महत्या कर रही है। और अनेक को उनके ससुराल वाले सास ,ससुर देवर,जेठ,पति आदि मोत के घाट उतार देते है। बहू को अनेक यातनाएँ देते है। उन्हे भूखा रखा जाता जानवरों की तरह पिटाई की जाती हैं। गलत काम करवाये जाते है। प्रत्येक अत्याचार जो धरती पर है वो सारे ही बेटियों को दहेज के कारण दिये जाते है। दहेज ऐसा लालच हैं जो बढ तो सकता है पर खत्म नही हो सकता। अगर माता–पिता वर पक्ष के अनुसार दहेज दे भी दे तो फिर भी उनकी दहेज की हवस पूरी नही होती है। एक मांग पूरी होने पर दूसरी मांग करते है। ओर दूसरी मांग पूरी होने पर तीसरी मांग करते है। यह सिंलसिला बार बार दोहराया जाता है। हमारा भारत दे"ा पुरूष प्रधान दे"ा है। जहां पर पुरूष का दर्जा औरत से बडा माना जाता है। जिसके चलते महिलायें चुपचाप शोषण सहन कर लेती है। क्योकि वो पति को परमे"वर मानती है। शहरों मे तो कम होता है। मगर ग्रामीण क्षेत्रो बहुत ूत अधिक होता है। महिलायें कितना भी शोषण हो जाये पर वो अपने पति के खिलाफ बहुत कम जाती है।

दहेज प्रथा की ऐतिहासिक पृश्टभूमि

बात करे दहेज प्रथा के इतिहास की तो दहेज प्रथा का इतिहास बहुत पुराना है। दहेज प्रथा बहुत सदियों से चली आ रही है। मगर इतिहास में जिस दहेज प्रथा का चलन होता था। वह आज की दहेज प्रथा से अलग थी। उस समय यह उपहार के रूप में प्रयोग किया जाता था। मगर आज कल यह एक मांग के रूप में है। प्रत्येक काल में स्थिति भिन्न–भिन्न थी–

- **प्राचोनकाल में दहेज** –इस काल में अर्थवेद के अनुसार उत्तर वैदिक काल में उपहार के रूप में इस प्रथा का चलन था प्राचीनकाल में दहेज प्रथा का कोई औचित्या या मान्यता नही होती थी उस

समय बेटी अपना वर स्वंय भी चुन सकती थी प्राचीनकाल में स्वंयवर होते थे जिससे बेटी अपनी पंसद से पति चुनती थी। उस समय में माता पिता अपनी बेटी को स्वच्छा से उपहार स्वरूप धन व सामान देते थे। प्राचीनकाल में लडके वाले कुछ नही मांगते थे। और जो कुछ भी माता–पिता बेटी को देते थे वो पहले नही बताते थे विवाह के समय पर ही प्रदान करते थे।मगर आज शादी तय होने पर ही लडके वाले अपनी मांग रख देते है। अगर मांग स्वीकार कर ली तो शादी हो जाती है। और मांग नही मान सके तो शादी टूट जाती है।

- **मध्यकाल मे दहेज** –प्राचीनकाल के बाद मध्यकाल का समय प्रारम्भ हो गया था। इस काल में दहेज प्रथा का हाल कुछ–कुछ प्राचीनकाल जैसा ही था। लडकी का पिता अपनी हैसियत के हिसाब से दमाद को धन देता था। उस काल में लोगो की ये मानसिकता थी की जो हम अपनी बेटी को धन स्वरूप तोहफा दे रहे है वो बेटी और उससे ससुराल वालो के बुरे समय में काम आयेगी। मगर लडके वालो की तरफ से कोई भी धन मांगने का दबाव नही होता था मगर उस समय जब बेटी विदा होती थी तब उसे यह उपहार स्वरूप दिया जाता था। अर्थात यह एक रस्म के रूप में सामने आ गई थी उस समय इसे स्त्रीधन के नाम से पहचान मिलने लगी थी।
- **ब्रिटिश काल में देहेज** – बात करे ब्रिट्रि"ा काल की तो इस काल मे दहेज प्रथा को बढवा मिला। देखा जाये तो भारत मे दहेज प्रथा का सिस्टम शुरू करने का श्रेय ब्रिट्रि"ा काल को ही जाता है। इस काल से पहले दहेज प्रथा का इतना बोलबाला नही था बस अपनी इच्छा अनुसार बेटी को उपहार स्वरूप दिया जाता था ब्रिट्रि"ा काल मगर के आते ही दहेज ने नया रूप धारण कर लिया। क्योकि ब्रिटि"ा सरकार का सबसे गन्दा नियम यह था कि माँ–बाप कि जायजाद मे बेटी को हिस्सा नही मिलेगा अगर बेटा न होने पर जायजाद बेटी को दे भी दी तो वह बेटी के पति के नाम पर ही होगी मगर बेटी के नाम पर नही। इस कारण भी बेटियो का शोषण होना शुरू हो गया था। और दहेज प्रथा हो बढावा मिला।
- **स्वतन्त्रता काल मे दहेज**– बात करे स्वतन्त्रता प्राप्ति समय से अब तक कि तो जब ब्रिट्रि"ा राज समाप्त हुआ तब तक दहेज प्रथा अपनी जड जमा चुकी थी इस कारण ही भारत सरकार ने अनेक कानून बनायें जिससे इस कुप्रथा को रोका जा सके। मगर यह खत्म नही हुयी बस बढती ही चली गई आज का यूग आधुनिकरण का युग हैं। मगर दहेज दिमग की तरह हमारे समाज को खा रहा हैं दहेज जैसे कुप्रथा से सतायी बेटियाँ गिली लकडी की तरह सुलग रही ना वो जल पा रही है ना बुझ पा रही है। दहेज प्रथा एक कैंसर के समान हैं जो बेटियों को निगल रहा है। और अनेक समस्यो को जन्म दे रहा हैं।

उददेश्य

- विभन्न कालो मे दहेज कुप्रथा की स्थिति का अध्ययन करना।
- भारतीय समाज मे व्याप्त दहेज कुप्रथा की उत्पति के कारणों का अध्ययन करना।
- महिलाओं मे दहेज कुप्रथा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- दहेज कुप्रथा कों समाप्त करने के लिये सरकार द्वारा चलाये गये कार्यक्रमों व प्रयासो का अध्ययन करना।
- दहेज प्रथा द्वारा उत्पन्न दुष्परिणाम का अध्ययन करना।
- दहेज प्रथा को बढाने वाले कारको का अध्ययन करना।

दहेज प्रथा एक समाजिक कलंक

दहेज का रोग केवल हिन्दुओ में नही बल्कि अन्य धर्मो मे भी फैल चुका है। सभी धर्मो में मुंह खोलकर चीजे मांगी जा रही है। दहेज प्रथा मध्यम एंव उच्च वर्ग मे नही है वरन निम्न वर्ग के परिवारों में भी यह बीमारी लग चुकी है। आज जो बेरोजगार है कुछ नही कमाता उसकी मांग भी आसमान छू रही है फिर जो सरकारी बाबू उनकी मांग तो सुनकर भी डर लगता है। शादी में अमीर लोग ने इतना पैसा बर्बाद करते है जिसकी कोई गिनती नही मगर इसका बुरा असर निम्न वर्ग पर पड रहा है। दहेज यह एक इस प्रकार का दानव है जिससे

पूरा समाज परे"ाान है यह हमारे समाज मे एक कलंक है जो पता नही कितने घर बरबाद कर चुका है यह वह अभि"ााप है। जिससे पता नही कितनी बेटियो को खा लिया है। आज भी बेटियां दहेज के नाम से ही डरती है। दहेज जैसी कुप्रथा भारत में ही नही ब्लकि पूरे वि"व के विकास में रूकावट हैं। हमारा समाज इस कुप्रथा के कारण जर्जर होता जा रहा हैं । आज बाप अपने घर में बेटी पालते हुये भी डरते क्योकि जो गरीब लोग होते स्वंय का पेट नही पाल सकते फिर वो दहेज कैसे और कहाँ से देगे जो लोग अमीर होते है वो तो दहेज देने में सक्षम होते है मगर जो गरीब होते है वो स्वंय की जमीन व सम्पति को बेचकर दहेज जैसी कुप्रथा की पूर्ति कर देते है । मगर जो मजदूर है और गरीबी की रेखा से भी नीचे है। वो क्या करे स्वंय को मारे या अपनी बेटियो को मारे आज हमारे समाज में दहेज ने अपना विकार रूप बना लिया है इसकी जडे फेलती ही जा रही है माँ–बाप` दहेज के नाम पर अपने बेटो का भी सोदा कर रहे है । अपने बेटों के मुहं मागें दाम लगा रहे है।और बेटियों को दहेज की अग्नि मे झोक रहे है। महिलाओं की दयनीय स्थिति के लिये दहेज भी काफी हद तक जिम्मेदार हैं।दहेज समाज मे जहर की तरह घुलता जा रहा है। **महात्मा गाधीजी** ने दहेज प्रथा के बारे मे कहा था की––

''जो भी व्यक्ति दहेज को भाादी की जरूरी

भार्त बना देता है,वह अपनी शिक्षा और अपने

दे"ा को बदनाम करता है,और साथ ही पूरी

महिला जात का भी अपमान करता है।''

गाँधी जी दहेज प्रथा के विरोधी थे, उनके अनुसार अपनी बेटी को पढने का अवसर दो वही सबसे बढा दहेज होता है। उन्हे इस बात का भी दुख था की दहेज ने योग्य पुरूषो को बिकाऊ बना दिया है। गाँधी जी बोलते थे यदि मेरी कोई बेटी होती तो मे उसे जीवन भर कुवारी रख लेता लेकिन ऐसे पुरूष से विवाह नही करता जो दहेज में एक कोडी भी मांगे । **आर्य समाज के संस्थापक महीर्श दयानन्द** ने भी दहेज को कलंक के रूप में माना था। और दहेज की कडी निन्दा की थी। **पं0 जवाहरलाल नेहरू जी** ने दहेज की बेटियों को खाने वाला दानव माना है। और दहेज के विना"ा के लिए जनता का उद्बोधन किया था।

दहेज कुप्रथा उच्च वर्ग से निम्न वर्ग की और

सबसे पहले दहेज का जन्म अमीर तबके मे हुआ था अमीरों ने ही अपनी गाढी कमाई से दहेज प्रथा की अग्नि मे घी डालकर उसकी ज्वाला को बढाया है। उच्च वर्ग ने अपनी धन सम्पति अधिक होने के कारण दहेज प्रथा को इतनी हवा दी है। कि व गरीबो के लिये एक अभि"ााप बन गया है। आज आधूनिकरण का दोर है। मगर फिर भी अमीर ओर गरीब के बीच का फासला कम नही हो पा रहा है। ब्लकि बहुत बढ गया है। यह कहना भी गलत नही होगा की उच्च वर्ग ने दहेज के पालन पोषण मे महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दहेज को दौलत व धन के खाद से फलने.फूलने दिया है। अब दहेज प्रथा रूपी दानव उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक पहुच चुका है अमीरो के तो धन की कमी नही उन्हे कोई समस्या नही उलटे ज्यादा से ज्यादा दहेज देकर उनकी शान बढती है जो मध्यम वर्ग वाले होते है वो भी जैसे तैसे करके दहेज की पूर्ति कर देते हैं । बात करे निम्न वर्ग की तो उनकी स्थिति तो इतनी शोचनीय होती है। जो एक वक्त की रोटी भी नही जोड पाते है। उन गरीबो को बिमार होने पर दवाईया भी नसीब नही होती है। अगर उनके यहाँ बेटी हो जाये तब तो उनकी हालत बत्तर हो जाती है। वो कोसते है। उस समय को जब वो इस दुनिया में आये थे कुछ बुर्जुग लोग बोलते है कि **'' हे भगवान अगर बेटी देगा तो धन भी देना जिससे वो किसी घर की लक्ष्मी बन सके '' और समान पा सके।** बात करे किसानो की तो हमने देखा कि किसान कर्ज में ही जन्म लेता है। और कर्ज में ही मर जाता है। किसान जो कुछ अपनी फसल से प्राप्त करता है। वो उसे दुसरी फसल उगाने में लगा देता है। ऐसे में उसकी बेटियां हो तो यह भी उसका बडा दुर्भाग्य हो जाता है। किसान कर्ज लेकर ही अपनी बेटी के मांग के अनुसार ही दहेज दे पाता है। अगर वो अपनी बेटियो को अपना पेट–काटकर पढा भी दे तो उनके लिए ि"ाक्षित लडका मिलना भारी होता है। अगर मिल भी जाये तो उसकी मांग आसमान छुती है। तभी अनेक परिवार अपनी बेटियों को गर्भ में ही मार देते है। जिससे दुनियां में आकर वो शोषण का ि"ाकार न हो। निम्न वर्ग की हालत बहूत गन्दी होती है, अगर उनके यहॉ बेटी हो जाये तो महातम मनाया जाता है और बेटे के

जन्म पर खुि"ायां मनाते है। दहेज के दानव का अन्त अब होना ही चाहिये दहेज कब तक जियेगा ?वि"व की किसी भी संस्कृति,किसी भी दे"ा ने विवाह को एक महान आध्यात्मिक संस्कार की इतनी महत्ता प्रदान नही की जितनी भारत दे"ा ने कि मगर फिर भी इस दे"ा मे वर पक्ष के लोग अपने बेटों के मुहं मागें दाम लगा रहे है। आज दहेज का दानव पूरे युवा पीडी को निगल रहा है। आज बेरोजगार और बेकार युवा की कीमत लग जाती है। और नौकरी वालो का बोली जब लगती है। तो जो सर्वाधिक दे उसी के हाथ बिकेगा दहेज का डायन होने के कई प्रणाम है। और इससे बडा प्रणाम यह है। कि जब बहु घर में आती है। तो अपने साथ दहेज के अभिमान को भी साथ लेकर आती है। नतीजा सुख–चैन की समप्ति हो जाती हैं और कभी–कभी बहुओं की आत्महत्या इसका चरण है आज दहेज के औचित्य पर भी कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। जिधर देखो दहेज–दहेज–दहेज आज प्रत्येक क्षेत्रो मे दहेज का खतरा मडंरा रहा है। आज प्रत्येक बेटी के हजारो सवाल की हम दहेज लेकर अपनी शानो–"ाौकत का जो दिखावा करते है। क्या वह सही है?

दहेज, भ्रुर्ण हत्या का जनक

यह सत्य है कि आज दहेज से बचने के लिये ही हम लोग बेटियों को कोख मे मार रहे है। आज जो भ्रुर्ण हत्यायें बढ रही हैं। उनका श्रेय दहेज प्रथा को ही जाता है। सोचने वाली बात तो यह है कि जो गरीब लोग है। वो कहा से दहेज दे सकते है। इसी डर के कारण माता पिता बेटी को कोख मे ही समाप्त कर देते है। अगर लोगो के यहां बेटा होता है। तो खुि"ायाँ मनाई जाती है। अगर बेटी हैं तो वहाँ पर महातम छा जाता हैं। जैसे कोई पाप हो गया है या कोई मर गया हो । इस भारतीय समाज मे जहा बेटी को कन्याओं के रूप मे पूजा जाता है दुर्गा,लक्ष्मी का स्वरूप समझा जाता है उसी समाज मे उसके पैदा होने पर शौक मनाया जाता है। माता– पिता अपनी बेटी को इस वजह से गर्भ मे मार देते हैं ताकि उसकी शादी के समय दहेज न देना पढे या उनमे दहेज देने कि हिम्मत नही होती। देखा जाये तो हर दिन 20 से 25 बेटियाँ दहेज की बलि चढ रही है। जिसके चलते भ्रुर्ण हत्या मे भी वृद्धि हो रही है। हर दिन 1800से1900 कन्याओं को गर्भ मे मारा जा रहा है। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की एक रिर्पोट मे बताया गया है कि साल 2001–05 मे करीब 6,82,000 कन्या भ्रुर्ण हत्यायें हुई हैं। निम्न वर्ग के लिये यह एक चिन्ता का विषय बन गया है। जो वर्ग पहले ही निर्धनता की आग मे तप रहा है दहेज उस वर्ग को और जला रहा है। तब तक भ्रुर्ण हत्या समाप्त नही होगी जब तक दहेज जड से समाप्त नही हो जाता है जो लोग स्वयं व अपने परिवार का पेट नही पाल पाते है तो वो कैसे बेटी पाल ले कहॉ से उसे दहेज दे। तब वो लालची या बेबस होकर उसे गर्भ मे समाप्त कर देते है। उनका यह मानना है की दहेज देना हमारे बस मे नही है और अगर दहेज ना दिया तो उनकी बेटी की शादी नही होगी तो वो दर दर कुवारी घुमेगी अगर हो भी गयी तो वो अयोग्य वर के साथ दुखी ही रहेगी। दहेज रूपी नाग पेट मे भी बच्चियों को खा रहा है। उन्हे अपने जहर से डस रहा है। इस दहेज के कारण ही जन्म देने वाले माता पिता हत्यारे बन रहे हैं। बच्चियो के गर्भ से लेकर मृत्यु के समय तक ये दहेज उनका किसी न किसी रूप मे शोषण कर रहा है।

दहेज प्रथा में वृद्धि के कारण

- **पुरूश प्रधानता** –भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है जहाँ स्त्री की स्थिति निम्न समझी जाती हे अत पुरूष प्रधानता के चलते भी दहेज प्रथा बढ रही है।
- **इ– भाादी की विज्ञापन से फैलती दहेज प्रथा** – आज का युग इंटरनेट का युग है आज इंटरनेट का ही बोल बाला देखा गया है। आजकल शादी के लिये रि"ते इंटरनेट के माध्यम से खोजे जा रहे है। इस तरह के विज्ञापनों में लडकी के परिवार वालें अपने अच्छे स्टेटस और कमाई को बहुत अधिक दिखाने की भूल कर बैठते है। जिसके कारण लडके वालो में कभी–कभी लोभ आ जाता है। और वो दहेज की मांग करने लगते है।
- **समाज में झूटा स्टेटस बनाना** हालि के आंकडें बताते हैकि आज कल समाज में अपना सो"ाल स्टेटस को लेकर काफी प्रतियोगिताएं हो रही है। और अपनी बेटी की शादी मे ज्यादा खर्च महँगे –महँगे तोहफे देना आदि भी दहेज प्रथा को बढाने देने वाले कारक है।
- **लडकी का सुन्दर न होना या कोई कमी होना –आज** दहेज देना मजबूरी बन गया हे अनेक लडकियाँ ऐसी होती है जो बदसूरत होती है। या किसी घटना की वजह से उसकी सुन्दरता समाप्त हो

जाती है या लडकी अपंगता का िशकार हो तो उससे कोई भी सही लडका शादी नही करना चाहता है। मगर दहेज के लालच मे कर लेता है जो एक तरह का समझोता होता है।

- **जाति मे ही विवाह का होना** –जाति के बाहर विवाह न होना गोरतलब की बात है। कि सभी लोग अपनी जाति मे विवाह करना चाहते है जिसमे शादी का क्षेत्र सिमित हो जाता है और मुहँ मागे दाम देने पडते हे अगर जाति मे बाहर दूसरी जाति मे विवाह करे तो देहज प्रथा मे कमी आ सकती है।

दहेज प्रथा द्वारा उत्पन्न दश्परिणाम

- **भुर्ण हत्या में वृद्धि**– दहेज प्रथा के कारण भ्रुर्ण हत्या में वृद्धि हो रही है समाज में बढती भ्रुर्ण हत्याओं एवं बढते हुये लैंगिक भदेभाव के पीछे भी एक बडा कारण दहेज ही है । हमारे समाज में तो भविष्य में दहेज जैसे संकट से बचने के लिए कन्याओ को कोख मे ही कत्ल कर दिया जाता है आये दिन अनको कन्याओ गर्भ से मौत के मुँह मे जा रही है । जिस इन्सान के पास स्वंय पेट भरने का रा"ान नही है। इसलिए मेहनत मजदूरी करके स्वंय और अपने परिवार को पालता है। वो अगर बेटी को पैदा करे तो दहेज कहाँ से देगा यह मानसिकता व मजबूरी भ्रुर्ण हत्या को बढावा दे रही है ।
- **आत्महत्या में वृद्धि**– भारतीय समाज में तो दहेज के लिए आत्महत्या आम बात हो गयी है । समाचार पत्र – पत्रिकाये पर अनेको खबरे दहेज द्वारा हुयी आत्महत्याओ व हत्याओं के आंकडे बताती है। जब नारी पर दहेज की प्रताडना सहन नही होती या अत्याचार की सीमा असहनीय हो जाती है तो वह स्वंय को मौत की गोद में चैन की नीद सूला देती है ।
- **घरेलू हिंसा**– दहेज एक सामाजिक कोढ है । जो नारी को खाये जा रहा है । दहेज को लेकर आये दिन घरो मे घरेलू हिंसा हो रही है । बेटी को पूर्ण दहेज न लाने पर मारा पिटा जाता है अनेक चोटे पहुचायी जाती है । कुछ घरो में तो ससूराल के प्रत्येक सदस्य ही बहू को मारते है उसका शोषण करते है ।
- **बाल विवाह में वृद्धि**– दहेज प्रथा कें कारण बाल विवाह में भी वृद्धि हों रही हैं। भारत में 7.9 प्रति"ात लडकियां 13 वर्ष की उम्र सें पहले ब्याह दी जाती हैं जब की अन्य 23.5 प्रति"ात लडकियों की शादी 14 वर्ष की आयु तक हो जाती हैं क्योंकि माता पिता की मानसिकता कें अनुसार की लडकी जितनी पढेगी बढेगी उतनी ही अच्छा वर तला"ाना पडेगा और उतना ही ज्यादा दहेज देना पडेगा जो निम्न वर्ग नही जूटा पाता है इसलिय वो कम उम्र मे ही बेटियो की शादी कर देते है।
- **वेश्यावृति में वृद्धि**– यह वि"व का सबसे प्राचीन व्यवसाय माना जाता है। देखा जाऐ तो जब से संगठित समाज है। तब से वे"यवृंति है। सन 1959 में महिलाओं में अनैतिक व्यापार दमन का कानून पारित किया गया था। मगर फिर भी वे"यावृंति में ज्यादा सुधार नही हुआ है। मगर आज के दहेज के कारण भी वे"यावृंति में बढोतरी हुई है। कुछ लोग जो गरीबी रेखा से नीचे है। वो दहेज नही दे पाते तब पति या ससुराल वाले पैसो के लालच में अपनी बहु के शरीर से व्यापार करते है। अगर वो इंकार करती है। तो उसे मारने या तलाक आदि की धमकी दी जाती है। कुछ लोग समाज में वहसी दरिन्दे है। जो पैसो के लिए किसी भी हद तक जा सकते है। वो अपनी पत्नी के शरीर को भी धन कमाने का साधन बना लेते है।
- **बेमेल विवाह में वृद्धि**–दहेज जैसे किडे के कारण बेटियां एक गाय की तरह किसी भी खुटे से बंधने को तैयार है। दहेज की मांग पुरा न करने में असमर्थ माता–पिता अपनी बेटी की शादी ऐसे लडके से करवा देते है। जो लडकी के लायक नही होता है। जैसे– रंग में, उम्र में, िशक्षा, आर्थिक स्थिति में या मानसिक स्थिति आदि में भी लडकी के अनुकूल नही होता जिसके कारण लडकी का जीवन नरक बन जाता है। उनका वैवाहिक जीवन सफल नही हो पाता है। कभी –कभी गरीब परिवार के लोग दहेज न दे पाने की वजह से अपनी बेटी की शादी ऐसें लडके के साथ भी कर देते है जिसका शादी एक बार हो चूकि हो और उसकी पत्नी मर गई हो ,तलाक
हो गया हो या दहेज के लालच मे उन्होने हत्या हर दी हो।
- **तलाक में वृद्धि**– तलाक शब्द आज प्रत्येक गलिहारो में गुंज रहा है। आज परिवारो मे झगडे कलह मार– पिट या वैवाहिक जीवन सुखमय न होना पत्नी का माँ न बनना आदि के चलते तलाक हो रहे है लेकिन इसका एक प्रमुख कारण है। दहेज की मांग पूरी न कर पाना भी है। अनेको बार ऐसा होता है। कि बेटी वाले चाहकर भी लडको वालों की मांग पूरी नही कर पाते जिसके चलते वर पक्ष के लोग

वधू पर अत्याचार करते है। जिसका निचोड तलाक पर आकर खत्म होता है। और मुस्लमानों में तो तलाक एक आम बात होती है। आय दिन दहेज को लेकर तलाक हो रहे है। अनेको बेटियां तलाक पाकर अपना जीवन अकेले गुजार रही है।

- **वधू के अंगो का व्यापार में वृद्धि–** आपको यह सुनकर भी विचित्र लगेगा की आज के इस युग में दहेज न मिलने पर जालीम मनुष्य नारी के अंगो को निकाल कर बेच रहा है। इससे यह लगता है। की अमीर बनने के धुन के चलते लोग जानवर बन चुके है। कौन दहेज के लालच में कितना गिर सकता है समझ पाना मुिश्कल है। सरकार तो दहेज प्रथा हटाने के बडे – बडे दावे कर रही है। मगर दहेज के दानव का बाल भी बाका नही हो पा रहा है। आये दिन अनेक बेटियो को बेरहमी से दहेज के लिए मारा जा रहा है। उनके अंगो का भी सौदा हो रहा है। जिसका जीता जगता उदाहरण है यह घटना ––––

घटना

(दहेज ना मिलने पर पति ने पत्नी की कीडनी बेच डाली)

आज दहेज के लालच को पूरा करने के लिए लडके वाले वधू के शरीर के अंगो तक को बेचने से पीछे नही हट रहे है। जिसका जीता जागता उदाहरण है– पिश्चम बंगाल के मुिर्शदाबाद में एक ऐसा मामला सामने आया जिससे मानव समाज शर्म”ाार हो जाएगा। पिश्चम बंगाल के मुिर्शदाबाद की रहने वाली महिला **सीता सरकार** का विवाह **विश्वजीत सरकार** नामक यूवक के साथ हुआ था। विवाह के प”चात उसके पति ने दो लाख रूपये की मांग की मगर सीता ने इन्कार कर दिया तब उसके पति ने उसकी अपेंडिक्स बिमारी का फायदा उठाते हुए धोखे से उसकी एक कीडनी निकाल कर बेच दी और सीता को कहा कि ऑपरे”न का किसी से जिक्र मत करना सीता को बताया गया उसका अपेडिक्स का ऑपरे”ान हुआ और वो अब ठीक हो जाएगी मगर उसका दर्द ठीक नही हुआ फिर सीता के रि”तेदार नार्थ बंगाल मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल में ले गये वहा जाकर डा0 से पता चला की उसकी दाहिनी कीडनी नही है। तब उसे समझ आया की वास्तव में अपेडिक्स के ऑपरे”ान का नाम लेकर उसकी कीडनी निकाल कर बेची जा चुकी है फिर सारा मामला पुलिस तक पहुचाया ।

इस पूरे मामले से यह सवाल उठता है। क्या करें बेटियां? कही पर दहेज के लिए काटी जा रही है, जलाई जा रही है, पीट–पीट कर बेहरमी से मारी जा रही है। दहेज के चलते उसके अंगों का भी शोदा हो रहा है। दहेज की मांग पूरा न करने पर उसकी दहे से भी व्यापार किया जा रहा है।ये दहेज के भेडिये खुले घूम कर अनेक बेटियों को अपना िशकार बना रहे है। लडकी एक सोने का अण्डा देने वाली मूर्गी मात्र ही रह गयी है। लोग वधू नही अपनी तिजोरयो को भरना चाहते है।

सरकार द्वारा किये गये प्रयास

अगर देखा जाये तो दहेज प्रथा को खत्म करने के लिये सरकार अनेक प्रयास कर रही है।

- दहेज निरोधक विधेयक 1961के अंतर्गत इस विषय पर कानून बना है। इसके अंतर्गत जब शादी से संबधित जो भी उपहार दबाव या जबरदस्ती के कारण दूल्हे या दुल्हन को दिये जाते ,उसे दहेज कहते है। उपहार जो मांग कर लिया हो उसे भी दहेज कहते है।
- दहेज लेना या देना या लेने देने मे सहायता करना अपराध है। शादी हुई हो या नही इससे फर्क नही पडता है। इसकी सजा है पॉच साल तक की कैद पन्द्रह हजार रूपये जुर्माना या अगर दहेज की रकम पन्द्रह हजार से ज्यादा हो तो उस रकम के बराबर जुर्माना ।
- दहेज का विज्ञापन देना भी एक अपराध है। और इसकी सजा है। कम से कम छः महीने की कैद या पन्द्रह हजार रूपये तक का जुर्माना।

- दहेज हत्या पर कानून भारतीय दंड साहिता की द्वारा 304 ख व 306 दहेज हत्या पर दंड का प्रविधान हैं इसके अंतगर्त यदि––

- शादी के सात साल के अन्दर अगर किसी स्त्री की मृत्यु हो जाये ।
- गैर प्राकृतिक कारणो से , जलने से या शारीरिक चोट से , आत्महत्या की वजह से हो जाये –और उसकी मृत्यू से पहले उसके पति या पति के रि"तेदार ने उसके साथ दहेज के लिये कुछ व्यवहार किया हो तों उसे दहेज हत्या कहते है।दहेज हत्या के संम्बध मे कानून यह मानकर चलता है कि मृत्यु ससुराल वालो के कारण हुई है

- **दहेज निरोधक विधेयक को 22 मई, 1961 को राश्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हो गई और 1 जुलाई सन् 1961से लागू कर दिया गया। इस विधेयक की मुख्य विशेशताएं निम्नलिखित है –**

- **इस** विधेयक की धारा 3 में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति दहेज देता या लेता है अथवा लेन–देन मे सहायक है तो उस पर 6 माह का कारावास तथा 5,000रू, का जुर्माना किया जा सकता है।
- धारा 4 के अनुसार यदि कन्या के माता–पिता अथवा संरक्षक से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में कोई व्यक्ति दहेज की मांग करता है तो वह भी उपरोक्त दंड का भागी हो सकता है। धारा 5 में कहा गया है कि दहेज लेन–देन से संबंधित किसी भी प्रकार का समझौता गैर–कानूनी समझा जाएगा।
- धारा 6 दहेज के उद्दे"यों को स्पष्ट किया गया है। दहेज का उद्दे"य केवल विवाह करने वाली कन्या के लाभ के लिए होगा । यानी कोई दूसरा व्यक्ति इसे स्वीकार करता है तो उसे एक वर्ष मे विवाहित स्त्री को वापस करना होगा।
- दहेज के समय कन्या नाबालिग हो तो बालिग अर्थात 18 वर्ष की आयु पूर्ण करते ही उसे वापस कर देना होगा। यदि वह कन्या का धन वापस नही करता है तो उसे उपरोक्त दंड दिया जा सकता है।
- इस विधेयक मे इतनी कमियां थी जिससे यह प्रभावी नही हो पाया। क्योंकि इसमें ि"ाकायत कर्ता को यह साबित करना होगा कि दहेज को वैवाहिक संबंध पक्का करने के लिए ही दिया गया है।
- अतर्गत धारा 1956 अवैधी देह व्यापार से सबधी कानून दंड प्राक्रिया साहिता की धारा 108 भारतीया दंड साहिता की धारा 188 जमानतीय एव गैर जमानती अपराध विवाह दहेज और कानून भारतीय दंड साहिता 1860 की धारा 498 व 498ए

सुझाव

दहेज प्रथा की जडे बहुत गहरी है। यह केवल सरकार या किसी व्यक्ति वि"ोष के द्वारा नही रोकी जा सकती अपितु हमारे समाज मे दहेज कुप्रथा को खत्म करने के लिये प्रत्येक वर्ग को अपना सहयोग देना होगा प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होना चाहिये की दहेज कुप्रथा का विरोध करे।

- आज की युवा पीढी को अपनी मानसिकता बदलनी होगी अगर वो बिना दहेज के शादी की र"म को पूरा करेगें तो स्वंय ही यह प्रथा अपना विस्तार कम कर लेगी माता–पिता को भी यह सोचना व समझना चाहिये की बेटियाँ सभी के घर मे होती है और दहेज लेकर वो अपने बेटी और बहू का अपमान कर रहे है।
- बेटियों को भी स्वंय की सोच बदलनी होगी अगर दहेज को लेकर उस पर अत्याचार हो रहे हो तो उसे भी कानून का सहारा लेना चाहियें। इसे अपना भाग्य समझकर अत्याचार नही सहना चाहिये। और आत्महत्या का कदम नही उठाना चाहिये।
- सरकार को दहेज प्रथा को लेकर कडे कानून बनाने चाहिये। और उन कानूनो पर कार्यवाही हो रही है या नही उसका भी निरीक्षण करना चाहिये
- सरकार को प्रयास करना चाहिये की इस प्रकार के कायकमो व संगोष्ठी का आयोजन किया जाये जिससे जनता जागरूक हो। और इस कुप्रथा से बाहर निकल सके।अगर किसी लडकी की शादी दहेज प्रथा से हो रही हो तो लडकी को भी बोलना चाहिये और इस प्रकार से शादी नही करनी चाहिये।

- माता पिता को अपनी बेटियों को पढाकर आत्यनिर्भर बनाना चाहिये जिसके चलते वो इन कुप्रथाओ का सामना कर सके। उनको भी बेटो की तरह ही जीवन जीने की अनुमति देनी चाहिये।
- प्रत्येक नागरिक को दहेज प्रथा के खिलाफ समाजिक जागरूकता बढानी होगी और इसे खत्म करने के लिये प्रयास करना चाहिये। हमारे समाज के अध्यापको को भी दे"ा से दहेज जैसी कुरूतियो को समाप्त करने के लिये अपना योगदान देना चाहिये।
- बच्चो के दिमाग मे कूट – कूट कर भर देना चाहिये कि दहेज एक अपराध है दहेज द्वारा शादी करना पाप है।
- ऐसी फिल्म और TV सीरियल को चलाया जाना चाहिये जो कि दहेज प्रथा के विरूद्ध हो और दहेज प्रथा का खण्डन करते हो।
- अन्तर्जातीय विवाहों को बढावा देना चाहिये जिससे योग्य वर मिल सके। और दहेज कम हो सके।

निश्कर्श

दहेज प्रथा हमारे समाज को हमारा नही छोडा ये प्रथा पुरे को अपने कब्जे मे कर खोखला बना चुकी हैं। हर तरह महिला स"ाक्तिकरण का नारा लगाया जा रहा है। वही दूसरी तरह भारत मे हर महीने 700 से ज्यादा महिलाएं दहेज बलि चढ रही है। हर घंटे एक दुल्हन दहेज के लालचियों के चंगुल मे फसकर अपनी जान गवाने पर मजबुर है। सोचने वाली बात यह है कि दहेंज के मामले सबसे ज्यादा उत्तर प्रदे"ा मे हो रहे है। हालाकि ये भी नही है।कि गरीबों के मुकदमे ही दर्ज हो रहे है। ब्लकि विधायक मन्त्री उघोगपतियो के खिलाफ भी पुलिस ने मुकदमा दर्ज किये है कुछ लोग तो इतने गिरे हुये भी है जो दहेज को आर्थिक स्तर बढाने का दर्जा बना लेते है। हालाकि आज भी कुछ लोग लडकी की कमाई खाना पाप समझते हैं परतुं जो गिरे हुये धन के भूखे लोग होते है तो स्वयं धन न कमाकर पत्नी व उसके माता–पिता का धन खाने मे ही सन्तुष्ट होते हैं। आजकल माता–पिता अपनी हैसियत से बढकर अपनी बेटी को दहेज देते है कुछ लालची तो बेटी की मृत्यू तक भी किसी न किसी रूप मे बेटी के माता–पिता से धन मागते रहते हैं दहेज के बढते मामले समाज मे अनेक कुरीतियां को भी जन्म देते है। सबसे प्रमुख समस्या है भ्रुण हत्या। आज तो इस प्रथा ने भी अपना आकार फेला लिया है। दहेज के कारण ही ग्रर्भपात की मात्रा बढ रही है। दहेज इतना विकराल रूप धारण कर लिया है कि विवाह एक व्यवसाय हो गया हैं। अब वर पक्ष के माता पिता को समझना चाहिए की दहेज लेना या देना कानूनी अपराध है। आज हर बेटियों यही पूकार कर रही है कि कब हम इन कुप्रथाओं से मुक्त हो पायेगे? बेटियॉ कब आजाद होगी? कब समझेगा ये समाज? ् कब बेटियो पर बन्द होगा अत्याचार।? अब प्रत्येक भारतवासियों को दहेज के खिलाफ आवाज उठानी होगी और यह समझना होगा कि– **दुल्हन ही सबसे बडा दहेज होता आइये आवाज उठाये इस प्रथा के खिलाफ और निर्माण करे एक नए भारत का। जय हिन्द जय भारत"**

सन्दर्भ सूची

- महाजन ,संजीव, समाज"ाास्त्र का वि"ावको"ा, अर्जुन पब्लि"ाग हाऊस 2009
- शर्मा रमा ,मिश्रा एम के , महिला वि"वको"ा, अर्जुन पब्लि"ाग हाऊस 2009
- गुप्ता कमले"ा कुमार ,भारतीय महिलाएँ ,नीरज पब्लि"ाग हाऊस दिल्ली 2014
- सविता ,21वी सदी की भारतीय महिलाएँ ,नीरज पब्लि"ाग हाऊस दिल्ली 2014
- सिहं वी .एन ,सिह जनमेजय, आधुनिकता एवं महिला स"ाक्तीकरन ,रावत पब्लिके"ान्स नई दिल्ली 2010
- https://www.google.co.in/amp/www.hindigyanbook.com/amp/दहेज प्रथा- कब -और –कहां- से -शुरू
- https://hi.wikipedia.org/wiki%.Eo%44%AD%E0%A4%BE%EO%BO%A4%A4%EO%A4%A4%AE%EO%A5%87%EO%A4%82%EO%A4%AE%E----
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/ दहेज प्रथा
- https://www.google.co.in/amp/s/m.jagran.com/lite/bihar/patna-city-murder-----
- https://readerblogs.navbharattimis.indiatimes.com/inqlaab-zindabad दहे–ज– प –रथ– समस –य– और –सम–ध
- https://www.essaysinhindi.com/social-issues/dowry/-custom/ दहेज प्रथा एक सामाजिक कलंक